भूमिका

वर्तमान युग में ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं जिसमें आधुनिकीकरण का समावेश न हो चाहे, वह शिक्षा हो, व्यापार हो, मेडिकल हो या फिर अनुवाद का ही क्षेत्र क्यों न हो इसे आधुनिकीकरण कहे या फिर मशीनी करण? अनुवाद के क्षेत्र में अनुवाद करने की गति को और गतिशील बनाने के प्रयास किए जा रहे उसी प्रयास में यह 'लघु शोध प्रबंध' प्रस्तुत किया जा रहा है। भारत एक बहुभाषी देश है जिससे हिंदी भाषा में संदिग्धार्थकता कि स्थिति उत्पन्न हो गई है। इस संदिग्धार्थकता के कारण अनुवादक अनुवाद के क्षेत्र में बहुत सी समस्याओं का सामना करते हुए अनुवाद करता है। आज जहां मशीन से अनुवाद करने की बात की जा रही है वहां ये समस्याएं और भी विकट रुप धारण कर लेती है। मानव जब अनुवाद करता है तो वह अपने पूर्व ज्ञान एवं संसारिक ज्ञान के द्वारा इन समस्याओं का निराकरण कर लेता है। लेकिन मशीन इन भाषाई समस्याओं को हल करने में असमर्थ हो जाती है। वैश्विक स्तर पर मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में कुछ प्रमुख समस्याओं को इस प्रकार से जाना जा सकता है। जिनका निराकरण पूर्ण रुप से नहीं हो पाया है। मशीन अनुवाद करते समय समान उच्चारण वाले भिन्नार्थक शब्द, संज्ञा एवं क्रिया की समस्या, वाक्यगत द्विअर्थकता, संदर्भ परक द्विअर्थकता,अस्पष्ट पद संकेत, कहावतें, मुहावरे,विकसित नए शब्द आदि। इन समस्याओं में से एक प्रमुख समस्या- संज्ञा एवं क्रिया की समस्या है जैसे-

"यह पालना मेरे बचपन का है"

"मोहन को गाय पालना है"

उपर्युक्त वाक्य में देखें तो मशीनी अनुवाद से जब इस प्रकार के वाक्यों का अनुवाद किया जाता है तो 'पालना' शब्द को एक ही व्याकरणिक कोटी में मशीन पहचान पाती है- संज्ञा या तो क्रिया रूप में, क्योंकि मशीनी अनुवाद में यह सूचना अभी तक नहीं हो पाई है कि 'पालना' शब्द कहाँ पर क्रिया रूप में प्रयोग हो रहा है और कहाँ पर संज्ञा रूप। इस तरह से देखें तो ऐसे कई सारे शब्द हिंदी भाषा में पाए जाते हैं जिससे मशीनी अनुवाद में संदिग्धार्थकता उत्पन्न हो जाती है। मशीन अनुवाद करते समय संज्ञा को क्रिया और क्रिया को संज्ञा रूप में अनूदित कर देती है।

प्रस्तुत लघु शोध में प्रमुख रूप से भाषा वैज्ञानिक शोध पद्धतियों उपयोग किया गया है साथ ही, 'विश्लेषणात्मक' संश्लेषण , एवं तुलनात्मक पद्धतियों का प्रयोग करते हुए अंतिम रूप प्रदान किया गया

है। इस शोध में केवल उन्हीं शब्दों को लिया गया जो ज़्यादातर रोज़मर्रा की शब्दावली में प्रयोग होते हैं। इस शोध में संज्ञा एवं क्रिया से संबंधित शब्दों को लिया गया है। न की वे जिनका प्रयोग विशेषण के रूप में भी होता है प्रस्तुत शोध अध्ययन पुरा करने के लिए हिंदी भाषा के 20 संदिग्धार्थक शब्दों का चयन किया गया है। शोध का क्षेत्र केवल मशीन अनुवाद पर आधारित है न की मानव अनुवाद।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध हिंदी से अँग्रेजी मशीनी अनुवाद प्रणाली में संदिग्धता पर विस्तार से चर्चा की गई है। केवल संरचना के आधार पर जो संदिग्धार्थकता उत्पन्न होती है, उसी का अध्ययन इस शोध में किया गया है। अन्य संदिग्धार्थकताओं पर केवल संक्षिप्त रूप में चर्चा की गई है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध विषय को अध्ययन की सुविधा के लिए तीन प्रमुख अध्यायों में विभाजित किया गया है। इन सभी अध्यायों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार से है-

प्रथम अध्याय का शीर्षक है '**संदिग्धार्थकता: संकल्पना एवं परिभाषा**' इस अध्याय में संदिग्धार्थकता के सैद्धांतिक पक्ष के बारे में बताया गया है। इस अध्याय में संदिग्धार्थकता का अर्थ परिचय एवं परिभाषा के साथ-साथ प्रकारों की भी चर्चा की गई है तथा शब्द की संदिग्धार्थकता के स्वरूप के बारे में भी बताया गया है। इन सभी के साथ-साथ संदिग्धार्थकता उत्पन्न करने वाले कारकों को भी समझने का प्रयास किया गया है।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है – **'संज्ञा और क्रिया स्वरूप एवं संदिग्धार्थकता'** इस अध्याय में संज्ञा एवं क्रिया संबंधी संदिग्धार्थकता के स्वरूप की चर्चा करते हुए यह भी बताया गया है कि किस प्रकार विभिन्न तरह से संज्ञा से संज्ञा रूप में संदिग्धार्थकता उत्पन्न हो जाती है। जैसे- बेटे के लिए माँ की **ममता** ही काफी है। **ममता** ने अपना पूरा काम कर लिया। भाव वाचक संज्ञा से जाति वाचक में परिवर्तित होकर संदिग्धार्थकता उत्पन्न हो रही है आदि कि चर्चा इस अध्याय में की गई है। इसी अध्याय में यह भी बताया गया है कि किस प्रकार एक ही शब्द व्याकरणिक इकाई के दो रूपों (संज्ञा एवं क्रिया) में प्रयोग हो रहा है।

तृतीय अध्याय- इस अध्याय का शीर्षक है **"संज्ञा एवं क्रिया संदिग्धार्थकता: अभिज्ञान एवं निराकारण संबंधी नियम"** इस अध्याय में संज्ञा एवं क्रिया रूप में प्रयोग होने वाले शब्दों की सूची तथा उन शब्दों का वाक्य प्रयोग किया गया है जिससे यह स्पष्ट हो सके कि जिस समस्या को लेकर शोध किया जा रहा है वह समस्या है या नहीं। इसी अध्याय में उन्ही वाक्यों का मशीन अनुवाद करके देखा भी गया है।

जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि संज्ञा और क्रिया की संदिग्धार्थकता है। इसके अलावा तृतीय अध्याय में ही वाक्यों का भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण कर संज्ञा एवं क्रिया की संदिग्धार्थकता के निराकरण संबंधी नियमों का निर्माण किया गया है। जिससे संज्ञा एवं क्रिया की संदिग्धार्थकता से निजात पाया जा सकता है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का मूल उद्देश्य संज्ञा एवं क्रिया संबंधी मशीनी अनुवाद में हो रही समस्याओं के निराकरण संबंधी नियमों का निर्माण करने का प्रयास किया गया है। इस लघु शोध का उपयोग नियम आधारित मशीन अनुवाद में संज्ञा एवं क्रिया की संदिग्धता को दूर करने में प्रयोग किया जा सकता है। अध्ययन करने के दौरान उक्त समस्या के बावजूद कुछ और समस्याएँ सामने आयी हैं जिन पर शोध करने की आवश्यकता जैसे- समान उच्चारण वाले शब्द, संज्ञा एवं विशेषण का प्रयोग, मुहावरे, लोकोक्तियों आदि में मशीनी अनुवाद करते समय इन समस्याओं से मशीन को जूझना पड़ता है। अतः इन समस्याओं पर भी भविष्य में शोध करने की आवश्यकता है।

इस लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण करते हुए मुझे अत्यधिक हर्ष, संतृप्ति एवं आत्मविश्वास की अनुभूति हो रही है। मैंने अत्यंत रूचि एवं तटस्थ होकर अपना शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयत्न किया है। यह शोध मेरे परिवार के आशीर्वाद, स्नेह, प्रोत्साहन एवं गुरुजनों के मार्गदर्शन, मित्रों की प्रेरणा से ही संभव हो पाया है। इन सभी के प्रति मैं सदैव आभारी रहूँगा।

सर्वप्रथम मैं अपने शोध निर्देशक डॉ.अन्नपूर्णा चर्ल का हृदय से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिनके स्नेहपूर्ण श्रमसाध्य मार्गदर्शन के बिना मेरा शोध कार्य पूर्ण नहीं हो सकता था। उन्होंने समय-समय पर मेरी समस्याओं का समाधान करते हुए मेरा मार्गदर्शन किया तथा शोध विषय संबंधी आवश्यक पुस्तकें उपलब्ध कराकर मेरी अत्यधिक सहायता की।

मैं अनुवाद अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. देवराज का आभार व्यक करता हूँ जिन्होंने इस तरह के साहित्येतर विषयों पर शोध कार्य करने की प्रेरणा दी। एक अभिभावक के रूप में उन्होंने समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया। मैं हृदय से उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। इसीक्रम में अपने अग्रज-डॉ मिलिंद पाटील, प्रवीण कुमार पाण्डेय, डॉ रणजीत भारती, डॉ धनजी प्रसाद , सुधीर ज़िंदे, शिल्पा के प्रति भी अपना आभार प्रकट करता हूँ।

मैं अपने मित्रों में प्रवेश कुमार द्विवेदी, योगेश भस्में, पन्ना लाल, प्रफुल्ल भगवान मेश्राम आकांक्षा मोहन, वासुदेव भाई का भी आभार मानता हूँ जिन्होंने समय समय पर मुझे सहयोग दिया। साथ ही मैं उन लोगों का भी आभार मानता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में मेरे शोध कार्य को पूर्ण करने में मुझे सहयोग दिया।

मैं अपने माता-पिता के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनकी अंतःप्रेरणा आशीर्वाद, सहयोग, आत्मबल से मैं अपना लघु शोध प्रबंध पूर्ण कर सका। मैं अपने बड़े भाई राजकरन का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे नैतिकता और आदर्श का पाठ सिखाया। इनके प्रति अपनी भावना को मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता, जिनके बिना मैं ख़ुद अस्तित्वविहीन हूँ। जिन्होंने मेरे डगमगाते आत्मविश्वास को भांपकर शोध-कार्य करने का आदेश अपने आशीर्वचन के साथ किया। इन्होंने मेरे हर फैसले में मेरा साथ दिया। इनके प्यार का क़र्ज़ तो मैं जिंदगी की आख़िरी सांसें त्यागकर भी नहीं चुका सकता। सभी छोटे-बड़ों के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने मेरा हौसला बढ़ाया एवं शोध कार्य करने के लिए मुझे प्रोत्साहित किया।